



उन्नीसवी सदी का धार्मिक उत्थान

डॉ. दिलखुश यु. पटेल

प्रिन्सीपल

वि. एन. एस. बी. ली. आर्ट्स एण्ड कोमर्स कोलेज, वडनगर

सांस्कृतिक दासता के युग में सेकड़ों वर्षों तक भारत का साधारण जन समाज निराश होकर अपनी सुध बुध खोये बैठा रहा। वह हिन परिस्थिति में पडकर प्राचीन परम्पराओं से उखड़ा हुआ सा अन्धविश्वास के सहारे जी रहा था। उन्नीसवी सदी में एक और धक्का लगा वह था ईसाइयों का धार्मिक जोश। वे भारतीय धर्मों के गर्दों गुबार की ओर ध्यान दिलाते हुए भारतवासियों को गिरा हुआ समजते थे। और लोगों को ईसाई बनाने में जुटे हुए थे।

एसेमें भारत कितना सोता ? देश ने अंगड़ाई ली। उसे अपने उस अभिनिवेश ने जगा दिया, जिसके अनुसार भारत को सारे संसार को धार्मिक प्रकाश देना था। पहला काम था अपने घर में दीपक जलाने का, अर्थात् अपनी धार्मिक परम्पराओं को देश और काल की प्रगति के अनुरूप विकसित करने का। सौभाग्य से यह काम करने के लिए अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी ने कुछ ऐसे रत्न पैदा किए जिनकी प्रभा से भारत जगमगा उठा। ऐसे महामानवों में राजा राममोहन राय, दयानन्द, विवेकानन्द, रविन्द्रनाथ और महात्मा गान्धी आदि प्रमुख रहे हैं। राजा राममोहन राय ने ब्रह्मसमाज की, दयानन्द ने आर्यसमाज की और विवेकानन्द ने रामकृष्ण मिशन की नींव डाली। राजा राममोहन राय के सामने मुख्य रूप से अंगरेजी और ईसाइयत ग्रस्त जनता के उद्धार का प्रश्न था और दयानन्द के सामने इस्लाम से हिंदुत्व की रक्षा करने की समस्या थी। राममोहन का कार्यक्षेत्र मुख्यतः बंगाल और दयानन्द का पश्चिमी भारत था। विवेकानन्द ने तो सारे विश्व को अपना कार्यक्षेत्र बनाया।

ब्रह्मसमाज

ब्रह्मसमाज के संस्थापक राजा राममोहन राय का जन्म बंगाल के बर्दवान जिले के राधानगर ग्राम के सनातनी ब्राह्मण जमींदार परिवार में १७७२ ई में हुआ।

१८११ ई.स. में राममोहन के भाई की मृत्यु हुई और उनकी पत्नी सती हो गई । इससे उन्हें बड़ा धक्का लगा । सती प्रथा को समाप्त करने के लिए उन्होंने हिन्दू ग्रन्थों से प्रमाण देते हुए लेख लिखे तथा अंग्रेजी सरकार को सती प्रथा को कानून द्वारा बन्द करवाने के लिए उन्होंने पत्र लिखे । उनके प्रयत्न से १८२६ ई० में लार्ड विलियम बेंटिक ने सती प्रथा पर प्रतिबन्ध लगा दिया । राममोहन राय ने बहुपत्नीत्व प्रथा का भी विरोध किया और हिन्दू धर्मग्रन्थों से प्रमाण देकर एक पत्नीव्रत को उचित ठहराया । उनकी मृत्यु १८३३ ई ० में इंग्लैंड में हुई, जहाँ वे मुगल बादशाह को अंग्रेजी सरकार से अधिक सम्माननीय पद और सुविधाएँ दिलाने के लिए गए थे ।

राममोहन राय ने १८१५ ई० में 'आत्मीय सभा'की स्थापना की, जिसका उद्देश्य हिन्दुओं के अंध विश्वासों को दूर करना तथा तर्क संगत विचारों को जन्म देना था। वे ईसाईयों के द्वारा की जाती हुई हिन्दू धर्म की निन्दा से दुःखी थे। इससे अपने धर्म और समाज की त्रुटियों को दूर करने की प्रेरणा उन्हें मिली। वे हिन्दू धर्म को रुढ़ियों से मुक्त करके नया रूप देना चाहते थे। इस कमी को पूरा करने के लिए उन्होंने १८१६ ई० में वेदांत कालेज की स्थापना की। इसके बाद उन्होंने ईसाई ऐकेश्वरवाद के प्रचार के लिए कलकत्ता युनिटेरियन सोसायटी की स्थापना १८२१ ई० में की। राममोहन राय को इतने से संतोष नहीं हुआ। हिन्दू धर्म और समाज सुधार के लिए उन्होंने एक ऐसी सभा की स्थापना करने का विचार किया। जो केवल उपनिषदों के सिद्धान्तों को माने। उन्होंने १८२८ ई ० में कलकत्ते में ब्रह्मोसमाज की स्थापना की।

ब्रह्मोसमाज आरम्भ में पूर्ण रूप से भारतीय विचारों को लेकर चला। वहाँ वेदों का पाठ कराया जाता था। साथ ही उपनिषदों का पाठ होता था। इस समाजने मूर्तिपूजा, जातिभेद, अस्पृश्यता आदि को नहीं माना तथा उस निर्गुण निराकार ब्रह्म की सत्ता स्वीकार की, जिसका वर्णन उपनिषदों में है। ब्रह्मोसमाज में अवतारों और उनकी पूजा के लिए कोई स्थान नहीं था। सभी धर्मों के प्रति उदारता और सहानुभूति इस धर्म की सबसे बड़ी विशेषता थी। जाति और धर्म का विचार न करते हुए सबको समजाने और धार्मिक कर्मकांडों को छोड़ने पर उन्होंने जोर दिया। वे धर्म के क्षेत्र के बुद्धिवाद को अपनाने की प्रेरणा देते थे। निचे लिखे ब्रह्मोसमाज के छः सिद्धान्तों में इस्लाम और ईसाई धर्मों की छाया दिखाई पड़ती हैं, जो इस प्रकार है।

१. ईश्वर नैतिक गुणों की राशि है ।
२. ईश्वर का अवतार नहीं होता ।
३. ईश्वर प्रार्थना से प्रभावित होता है ।
४. ईश्वर की प्रसन्नता के लिए कर्मकांड और पूजा , मंदिर में जाना या साधू बनना अनावश्यक है ! सभी जाति के आदमी ईश्वर के लिए सामान है ।
५. संसार से अलग रहने से ईश्वर प्रसन्न होता है ।
६. ईश्वर का ज्ञान अनुभव से होगा ! इसके लिए पुस्तकें पढ़ना आवश्यक नहीं है ।

राजा राममोहन राय ने सभी मानवों के सुख के लिए सबकी समानता और विश्वव्यापी मानव कुटुंब की योजना प्रकाशित की ! यही उनका विज्ञान सम्मत धर्म था ।

उपयुक्त कामों के अतिरिक्त भारतीय समाज सुधार के लिए राममोहन ने ब्रह्मनिकल मेगेजिन ईसाइयो कि उन बातों का खण्डन करने के लिए निकली, जिनके द्वारा वे हिन्दू धर्म की निन्दा करते थे! उन्होंने १८२२ ई ० में एंग्लो हिन्दू विधालय की स्थापना हुई। १८२२ ई ० में संवाद कौमुदी नामक अंग्रेजी और बंगला अखबार निकला और। १८२१ ई ० में फारसी भाषा में मीरातुल अखबार निकाला। वे चाहते थे की भारत योरप के नये तरीके अपनाकर विज्ञान के द्वारा आर्थिक विकास करे। वे किसानों की गरीबी और पिछड़ापन दूर करने के समर्थक थे।

राममोहन राय की मृत्यु के बाद १८४३ ई ० से ब्रह्मोसमाज के नेतृत्व का काम देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने किया। राममोहन राय का वेदों और उपनिषदों पर अटल विश्वास था और किसी भी अवस्था में वे वेदों पर अविश्वास करने को तैयार नहीं थे। किन्तु देवेन्द्रनाथ के समय में ब्रह्म समाज के अनुयायियों में इस बात पर विवाद छिड़ गया की वेद सर्वोपरी प्रमाण है या नहीं। विवाद के बाद यह निश्चय हुआ की वेदों को भी अंतिम प्रमाण नहीं माना जा सकता। वेदों के उपदेश वही तक मान्य है, जहाँ तक वे हमारी बुद्धि से मेल खाते हैं। इस प्रकार महर्षि देवेन्द्रनाथ के समय में ब्रह्मोसमाज अपने मूल रूप (हिंदुत्व) से दूर हटने लगा। वे विधवा विवाह के समर्थक थे। केशवचन्द्र सेन ने १८५७ ई० में ब्रह्मोसमाज में प्रवेश किया। ये ईसाई धर्म तथा योरोप की संस्कृति से बहुत अधिक प्रभावी थे तथा ब्रह्मोसमाज को उसी और मोड़ने लगे। देवेन्द्रनाथ ब्रह्मोसमाज को हिन्दू धर्म का एक अंग बनाये रखना चाहते थे। पर केशवचन्द्र ब्रह्मोसमाज को ईसाई धर्म की ओर ले जाना चाहते थे। अन्त में देवेन्द्रनाथ ठाकुर और केशवचन्द्र में मतभेद हो गया और केशवचन्द्र ने सन १८६६ में अपना समाज अलग कर लिया, जिसका नाम भारतीय ब्रह्मोसमाज पड़ा। देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने अपने समाज को आदि ब्रह्मोसमाज नाम दे दिया।

केशवचन्द्र ने अपने ब्रह्मोसमाज में ईसाई धर्म के सिद्धांतों के प्रचार को महत्वपूर्ण स्थान दिया। उन्होंने अन्य धर्मों की उपासना पद्धतियाँ भी स्वीकार की। उनके निदर्शन में समाज का एक प्रार्थना संग्रह बनाया गया, जिसमें हिन्दू, बौद्ध, यहूदी, ईसाई, मुस्लिम आदि उनके धर्मों की प्रार्थनाएँ थी। आगे चलकर केशवचन्द्र के ब्रह्मोसमाज में भी कुछ लोग उनके विरोधी बन गए और इस समाज के भी दो दल हो गए ! विरोधियों ने साधारण ब्रह्मोसमाज बनाया।

योरोपीय विचारधारा से प्रभावित होने के कारण ब्रह्मोसमाज सदैव थोड़े से शिक्षित लोगो तक ही सिमित रहा। इसका प्रचार साधारण जनता में नहीं हो सका। फिर भी ब्रह्मोसमाज आन्दोलन भारतीय संस्कृति के महान आन्दोलनों में से एक है ,क्योंकि यूरोप की संस्कृति और विचारधारा ने ब्रह्मोसमाज के माध्यम से हिन्दू धर्म में प्रवेश किया। ब्रह्मोसमाज की स्थापना का उद्देश्य भारत के प्राचीन सत्यो का समन्वय योरोप के नये अनुसंधानों के साथ करना था और यह समाज अपने इस उद्देश्य की पूर्ति में अनेक अंशों में सफल रहा।

प्रार्थना समाज

पूर्वी भारत में राजा राममोहन राय, रामकृष्ण और विवेकानन्द आदि ने हिन्दू समाज को उन्नीसवीं सदीमें नवचेतना दी। इसी सदीमें पश्चिमी भारतमें ईसाई धर्म के प्रचारकों को रोकने के लिए गुप्तसमाज, परमहंस सभा और प्रार्थना समाज की स्थापना क्रमशः हुई। गुप्तसभा की स्थापना १८४० ई. के लगभग

हुई। उसके विकसित रूप में परमहंस सभा की स्थापना १८४९ में हुई। इन संस्थाओं का उद्देश्य था भारतीय समाज से पारस्परिक उंच नीच और छुआछुतका भाव हटाना। इन लोगों की धारणा थी की इन्हीं के कारण लोग मुसलमान या इसाई बनते है। वे इसाई और मुसलमानों को भी अपने से दूर नहीं समजते थे और उन्हें मिलने के लिए उनका बनाया भोजन और दिया हुआ पानी ग्रहण करते थे। उनकी इतनी उदारता समाज को सह्य न थी। इस सभा का १८६० ई. के लगभग विघटन हो गया। ये संस्थाएँ प्रार्थना-समाज की भूमिका-रूप में बनी थी। प्रार्थना-समाज की स्थापना १८६७ ई. में हुई।

प्रार्थना समाज को महाराष्ट्र के अग्रगण्य नेताओं ने अपनाया। पूनाके सुप्रसिद्ध विद्वान और समाजसेवी महादेव गोविन्द रानाडे और रामकृष्ण गोपाल भंडारकर इसके कर्णधार बने। शीघ्र ही ब्रह्मोसमाज से इसका संपर्क स्थापित हुआ और इसका कार्यक्षेत्र विकसित होने लगा। मैसूर और मद्रास में भी यह संस्था बढ़ चली। प्रार्थना-समाज के सिद्धांत स्थापित हुए और इसका कार्यक्षेत्र विकसित होने लगा। मैसूर और मद्रास में भी यह संस्था बढ़ चली। प्रार्थना समाज के सिद्धांत इस प्रकार थे।

- (१) सृष्टि के रचयिता इश्वर एक है।
- (२) इश्वर ही उपास्य है। उसकी आराधना में सुख है।
- (३) भजन से उपासना होती है।
- (४) ईश्वर का अवतार नहीं होता है।
- (५) सभी मनुष्यों को ईश्वरने बराबर बनाया है।

रानाडे और भण्डारकर दोनोंने समाज-सुधार की निचे लिखी योजनाएं चलाई।

- (१) बाल-विवाह का विरोध
- (२) विधवा-विवाह का समर्थन
- (३) पर्दा-प्रथा का विरोध
- (४) सभी मनुष्यों की समानता
- (५) पाप को सामाजिक हीनता के लिए कारण मानना
- (६) भाग्यवाद का विरोध और
- (७) कर्म करते हुए आधि भौतिक उन्नति से विमुख न रहना।

आर्य-समाज

आर्य-समाज की स्थापना स्वामी दयानंद ने १८७५ ई. में की। उनका जन्म गुजरात में १८२८ ई. में टंकारा गाँव में सनातनी शिवभक्त परिवारमे उस युग में हुआ था, जब बंगाल में राजा राममोहन राय की सुधारावादी प्रवृत्तियोकी धूम थी। उनका बचपन का नाम मूलशंकर था। दयानंदने ने १४ वर्ष की अवस्था तक वेदों के अनेक भागो को कंठस्थ कर लिया था और साथ ही संस्कृति की ऊँची योग्यता प्राप्त की थी। इसी बिच कुछ ऐसी घटनाए घटी, जिन्होंने दयानन्द को मूर्तिपूजा का विरोधी बना दिया। वे परिवार के लोगो से उदासीन रहकर अपने विचारो में ही मग्न रहने लगा। माता पिता ने जब १८४६ ई.में उनका विवाह कर देना चाहा तो वे घर छोड़कर पन्द्रह वर्षो तक ज्ञान की खोज में भ्रमण करते रहे। उन्होंने ब्रह्मानंद नामक गुरु से वेदांत, दर्शन और योग के सिद्धांतो का अध्ययन किया और अद्वैत वेदांतो परमानंदन से दीक्षा लेकर दयानंद

बन गए। वे अनेक विद्वानों के पास गया, पर कोई उन्हें प्रभावित न कर सका। अंत में स्वामी विरजानन्द नामक विद्वान सन्यासी के शिष्य हो गए और ढाई वर्ष उनके पास रहकर व्याकरण, वैदिक धर्म तथा दर्शन का अध्ययन किया। उन्होंने अनेक स्थानों पर भ्रमण किया और वहा के पंडितों को मूर्तिपूजा जैसे प्रश्नों पर शास्त्रार्थ करके पराजित किया। १८३२ इ.में कलकते में केशवचन्द्र के सम्पर्क में वे मिशनरी बन गए। १८७४ इ. में उन्होंने प्रयाग में सत्यार्थ प्रकाश पूरा किया और १८७५ में महाराष्ट्र के प्रार्थना समाज से सम्पर्क स्थापित किया। इसी वर्ष आर्य समाज की स्थापना भी उन्होंने की। पुराने हिन्दू रीतरिवाजों का विरोध करने के कारण कई लोग दयानंद के विरोधी हो गए। राजाओं के विलासी जीवन के वे कटु आलोचक थे। ऐसी परिस्थितिमें उनके शत्रुओं की संख्या कम न थी। जोधपुर के राजा की आलोचना करना उनकी मृत्यु का कारण बना। लोगोंने षडयंत्र रचकर १८८३ इ.में किसी वेश्या के द्वारा उनको विष दिलाया, जिससे वे मर गये।

दयानंद ने अपने विचारों के प्रचार के लिए अनेक ग्रन्थ लिखे, जिनमें वेदों और उपनिषदों के सिद्धांतों की व्याख्या है। वेदों का प्रमाण देते हुए उन्होंने हिन्दू समाज में प्रचलित अंधविश्वासों का विरोध किया। वेदों पर लिखी गई उनकी टिका, ऋग्वेदादी भाष्य भूमिका से उनके अपार वैदिक ज्ञान का परिचय मिलता है। उनका सत्यार्थ प्रकाश आर्य समाज के सिद्धांतों की प्रसिद्ध पुस्तक है। उनकी स्वधर्म, स्वभाषा, स्वदेश आदि पुस्तकों में राष्ट्रिय जागरण का सन्देश था। दयानंदन सबसे पहले धार्मिक नेता थे, जिन्होंने हिंदी के माध्यम से राष्ट्रिय एकता पर बल दिया और प्रायः सभी ग्रंथ हिंदी में लिखे।

आर्य समाज के सिद्धांतों के अनुसार इस जगत का मूल ईश्वर निर्गुण, निराकार, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान तथा न्यायकर्ता और कृपालु है। ईश्वर की ही उपासना करना चाहिए। केवल वेद ही प्रमाणिक हैं तथा पुराण स्मृतियाँ आदि निराधार हैं। आर्य समाज कर्मफल और पुनर्जन्म को मानता है तथा गो रक्षा को हिन्दू धर्म का आवश्यक अंग मानता है। आर्य समाज ने हिन्दू धर्म के वैदिक रूप को समाज के सामने रखा और पौराणिक रूढ़ियों में फँसकर अपना विनाश करनेवाले भारत को नवजागरण का सन्देश दिया। दयानंद के अनुसार सच्चा धर्म वैदिक धर्म है, जिसको अपनाने से भारत फिर विश्वविजयी बन सकता है। उन्होंने इसाईयों और मुसलमानों को कड़ी फटकार दी, जो हिन्दू धर्मकी निन्दा करते थे। उन्होंने इसाई और इस्लाम धर्मों का अध्ययन करके इनमें भी वे ही दोष दिखला दिए, जिनके कारण उन धर्मों के प्रचारक हिन्दू धर्म की निन्दा करते थे। इससे हिन्दू जनता में आत्मविश्वास जागा। उसका ध्यान अपने धर्म के मूल रूप की ओर आकृष्ट हुआ तथा वह अपनी प्राचीन परम्परा के लिए गौरव का अनुभव करने लगी।

दयानंद की दृष्टि से योरपीय संस्कृति की अच्छाईयाँ ओजल नहीं थी। उन्होंने योरप की उन्नति के कारणों की समीक्षा करते हुए खोज की है कि वहाँ के लोग आगे बढ़े हैं, क्योंकि वे (१) बालविवाह नहीं करते, (२) बच्चों को उपयोगी शिक्षा देते हैं, (३) विवाह के लिए स्वयंवर करते हैं, (४) बच्चों को अच्छी संगीत में रखते हैं, (५) पारस्परिक परामर्श से काम करते हैं, (६) समाज के लिए सर्वश्व बलिदान करने के लिए तत्पर रहते हैं। (७) कर्मण्य है, (८) स्वदेशी वस्तुओंका प्रयोग करते हैं, (९) अन्धानुकरण न करते हुए अपनी रहन सहन अपनाये रहते हैं, (१०) कर्तव्य का पालन दृढ़ता से करते हैं (११) श्रेष्ठ जनों की आज्ञा का पालन करते हैं और (१२) देशवासियों की सहायता करते हैं।

दयानंद ने आर्य समाज के संघटन करने में ऊपर की सभी बातों को अपनाया। वास्तव में ये सिद्धांत वैदिक समाज में थे, जिसकी प्रतीति वेदों के पढ़ने से दयानंद को हुई थी। वे वेदों को विज्ञान सम्मत मानते थे और उनका दावा था की विज्ञान का मूल वेद ही है। उस विज्ञान के सहारे जैसे योरप बढ़ा है, वैसे ही भारत को भी बढ़ना है।

दयानंद ने अपने अनुयायियों के लिए नियम बनाये, जिनके अनुसार ईश्वर सर्वोच्च सत्ता है। उसने वेद की रचना की है, जिसमें विशुद्ध, ज्ञान विज्ञान है। सत्य को ग्रहण करना चाहिए और असत्य को छोड़ना चाहिए। सभी मनुष्यों की भलाई करनी चाहिए। दुसरे का लाभ अपना लाभ है। पारस्परिक प्रेम बढ़ाना चाहिए। अधिक से अधिक विद्वा प्राप्त करनी चाहिए जिससे अज्ञान कम से कम रह जाए। सामाजिक नियमों को समाज में और वैयक्तिक नियमों को व्यक्तिगत रूप से मानना ही चाहिए।

दयानंद के उपर्युक्त नियम अखिल मानवता की प्रगति, कल्याण और सुख के लिए उपादेय रहे हैं।

इस युग में योरोप बुद्धिवाद ने भारत को इतना झकझोर दिया था की हिन्दू धर्म के तर्क सम्मत रूप को सामने लाना आवश्यक था। दयानंद ने घोषणा की कि हिन्दू धर्म ग्रंथों में केवल वेद ही मान्य है, अन्य शास्त्रों और पुराणों की बातें बुद्धि को कसौटी पर कसे बिना स्वीकार नहीं करनी चाहिए। उन्होंने समाज में एक नयी क्रांति को जन्म दिया। आर्य समाज द्वारा किए गए सामाजिक सुधार के कार्य महत्वपूर्ण हैं। स्वामी दयानंद ने परम्परागत जातिप्रथा का विरोध किया तथा समाज का ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि चार वर्णों में विभाजन गुण और कर्म के आधार पर होना चाहिए, जाती के आधार पर नहीं - इस वैदिक विचार को मान्यता प्रदान की। उन्होंने बाल विवाह तथा बेमेल विवाह की अनुचित बताया तथा लड़कों के विवाह की आयु कम से कम बाईस वर्ष तथा लड़कियों के विवाह की आयु सोलह वर्ष निश्चित की। आर्य समाज ने विधवा विवाह के प्रचलन तथा स्थिति सुधारने के लिए महान कार्य किया है। अस्पृश्यता को दूर करने के लिए भी आर्य समाज ने आन्दोलन चलाया। अनेक अनाथालयों और विधवाश्रमों की स्थापना दीन, दुखी और अनाथ लोगों की सहायता करने के लिए की गई। मूर्ति पूजा का घोर खंडन किया गया।

आर्य - समाज के कार्यों में शुद्धि -आन्दोलन विशेष महत्वपूर्ण माना जा सकता है। इस युग में शुद्धिकरण की और किसी अन्य नेता का ध्यान नहीं गया था। दयानंद और उनके अनुयायियों ने घोषणा कर दी की जो हिन्दू किसी भी कारण से हिन्दू धर्म को छोड़कर दूसरा धर्म अपना चुके हैं, वे यदि फिरसे अपने धर्म में आना चाहे तो आ सकते हैं। धर्म इसके अनुसार उन सभी लोगों को फिर हिन्दू-समाज और धर्म में यज्ञ, शुद्धि और दीक्षा द्वारा अपना लेने की योजना प्रारंभ हो गई, जो बलपूर्वक मुसलमान या इसाई बन गए थे और बिहार आदि प्रान्तों में ऐसे लाखों व्यक्ति शुद्ध किए गए। अन्य धर्मों के मानने वाले भी इसी विधि से हिन्दू बनाये जाते थे

शिक्षा के क्षेत्र में भी आर्य समाज ने महत्व पूर्ण कार्य किए। इसाई मिशनरियों द्वारा स्थापित स्कूलों की शिक्षा से विधार्थियों को बचाकर उन्हें भारतीय पद्धति से शिक्षा देने के लिए अनेक विद्वालयों की स्थापना की गई। ऐसी संस्थाएँ पंजाब तथा उत्तरप्रदेश में बहुत बड़ी संख्या में अभी भी चल रही हैं। इन संस्थाओं से भारतीय संस्कृति की रक्षा हुई है। स्त्री - शिक्षा की और भी आर्य समाज ने ध्यान दिया। सभी बड़े-बड़े नगरों में कन्या पाठशालाएँ खोली गईं। विधवाओं को शिक्षा विधवा-आश्रमों में ही दी जाती थी।

आर्य-समाज में नई पध्दति की शिक्षा के प्रसारक लाला हंसराज, लाला लालचंद और लाला लाजपतराय थे | पुराणी वैदिक शिक्षण पध्दति के प्रसारक स्वामी श्रद्धानंद (मुशीराम) हुए, जिन्होंने हरद्वार में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की, जो आज विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हो गया है |

इस्लाम और इसाई धर्म के आक्रमणों से हिन्दू धर्म की रक्षा करने में आर्य - समाज को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा| ऐसी स्थिति में आर्य-समाज साहस तथा धैर्य से अपना कार्य करता रहा | उसे अपने उद्देश्य में सफलता मिली| हिन्दू -समाज पर आर्य - समाज की विचारधारा का गहरा प्रभाव पड़ा है, वास्तव में सारे उत्तर भारत की जनता को जगाकर उसे प्रगतिशील बनाने का श्रेय बहुत कुछ आर्य - समाज को जाता है |

ब्रह्म -समाज तथा आर्य - समाज बड़े ही प्रमुख आन्दोलन थे, परंतु उनमें कुछ कमियां थीं| दोनों ही आन्दोलनों के प्रवर्तक हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए तत्पर हुए थे, परंतु राजा राममोहनराय और दयानन्दने वेदों, उपनिषदों और अद्वैतवाद को सर्वाधिक महत्व दिया| इस प्रकार सारे हिन्दू धर्म का प्रतिनिधित्व ये दोनों नहीं कर पाये| हिन्दू धर्म अपने सम्पूर्ण रूप में जीता - जागता हुआ परमहंस श्री रामकृष्ण में दिखाई देता है,जिनके नाम पर श्री रामकृष्ण मिशन की स्थापना उनके शिष्य विवाकानंद ने की |

श्रीरामकृष्ण - मिशन

रामकृष्ण का बचपन का नाम गदाधर था | उनका जन्म १८३६ इ. में बंगाल में गरीब ब्राह्मण परिवार में हुआ था | वे बचपन से ही चिंतनशील थे और ईश्वर भक्ति में लीन रहते थे | छः वर्ष की आयु में समाधिस्थ होने लगे | युवावस्था में वे काली के एक मन्दिर में पुजारी का काम करने लगे | काली का माता रूप में दर्शन करने के लिए वे व्याकुल हो कर प्रार्थना करते थे | उनकी व्याकुलता नित्य बढ़ती गई | एक दिन निराश होकर उन्होंने जब अपने प्राणों को ही समाप्त कर देने का निश्चय किया, तब उन्हें मातृशक्ति का दर्शन हुआ | उनकी साधना और समाधी बढ़ती गई | कुछ समय बाद जब वे अपने गाँव लौटे तो उनका विवाह शारदामणि देवी से हुआ | फिर भी पति-पत्नी का सम्बन्ध सदा आध्यात्मिक रहा और रामकृष्ण ने अपनी पत्नी में भी काली माता को देखा |

महान योगी और महात्मा के रूप में श्री रामकृष्ण की ख्याति समस्त भारत में फैल गई | वे केवल मातृ - शक्ति के दर्शन और साधना तक ही सिमित न रहे | उन्होंने वेदांत के आदर्शों पर चलते हुए ब्रह्मज्ञान की जिस साधना को पूरा करने में चालीस वर्ष लगे थे, उसे उन्होंने तीन दिनों में ही पूरा कर लिया | इनके अतिरिक्त उन्होंने केवल काली में ही नहीं, सभी हिन्दू देवी देवताओं में भक्ति दिखलाई और राम, कृष्ण, विष्णु, शंकर, बुद्ध आदि देवताओं की अलग अलग विधियों द्वारा उपासना करने उनके दर्शन किए | उन्होंने इस्लाम और इसाई धर्म की साधनाएँ भी की तथा अल्लाह और इसा मसीह के दर्शन किए | इस प्रकार श्रीरामकृष्ण संत, ज्ञानि, योगी और भक्त सभी एक साथ थे | उन्होंने अपने जीवन के प्रत्यक्ष उदाहरण द्वारा यह दिखा दिया की सभी धर्म मूलरूप से एक हैं | उन्होंने प्रत्यक्ष दर्शन किया की धर्म का ज्ञान यदि एक जलाशय है तो विभिन्न धर्म उसका जल लेने के लिए घाट बने हुए हैं | सभी देवी-देवता, पौराणिक आचार और अनुष्ठान, धर्म की विविध साधनाएँ तथा जनता के अनेक धार्मिक विश्वास रामकृष्ण के मत में प्रतिष्ठित हैं | श्रीरामकृष्ण के रूप में भारत की सनातन परम्पराएँ साकार हो उठी | उन्होंने

भाषण दिए बिना तथा सभा - सम्मेलनों में शास्तार्थ किए बिना अपने कार्यो और अनुभूतिया से यह सिद्ध कर दिखाया की हिन्दू धर्म का केवल वेद और उपनिषद वाला ही नही, बल्कि पुरानो और संतो की जीवनियो में बताया हुआ रूप भी सत्य है ।

श्री रामकृष्ण की शिक्षा किसी विध्यालय में नहीं हुई थी । इस द्रष्टि से वे निरक्षर थे । उन्होंने ने सभी धर्मों और सम्प्रदायों का ज्ञान दुसरो से सुन-सुन कर पाया था । वे अपनी साधना से उस ऊंचाई पर पहुँचे थे, जहाँ से सच्चे ज्ञान की गंगा अपने आप बह निकलती है । उन्होंने ने यह सिद्ध कर दिखाया की धर्म को केवल बुद्धि या तर्क से नही जाना जा सकता । वह अनुभूति की भी वस्तु है । धर्मों को जानने के लिए शास्त्रोंके अध्ययन की उतनी आवश्यकता नही है, जितनी साधना की । इसी लिए श्री रामकृष्ण के सामने बड़े-बड़े दार्शनिक और पंडित अपना सारा ज्ञान भूलकर उनकी शरण में आने लगे । इस महान संत की सर्व धर्म समन्वय की वाणी में वह जादू था, जिससे सहस्रों की संख्या में भक्त खिंचे चले आते थे । उनके उपदेश सुनकर न जाने कितने लोगो की जीवन - धारा बदल गई । ब्रह्म समाज के नेता केशवचन्द्र सेन भी उनके सम्पर्क में, आये और अतिशय प्रभावित हुए । उनके शिष्य में नरेंद्रदत्त प्रमुख थे । वे १८८१ इ.में रामकृष्ण के शिष्य बने । आगे चलकर वे स्वामी विवेकानंद के नाम से विख्यात हुए । उन्होंने श्री रामकृष्ण मिशन की स्थापना १८८७ इ. में कलकते के पास बेलुर में की ।

विवेकानन्द

विवेकानंद ने भारत और विश्व की समस्याओ पर विचार किया और उनके जो समाधान प्रस्तुत किए, वे रामकृष्ण के ही दिए हुए थे । उन्होंने श्री रामकृष्ण कि ही अनुभूतियो का व्यावहारिक पक्ष सबके सामने रखा, यही विवेकानंद का कर्मयोग है, जो गुरु के ज्ञानयोग पर आधारित था । विवेकानंद का जन्म सन १८६३ में कोलकता में एक कायस्थ परिवार में हुआ था । अपने विद्यार्थी जीवन में वे उन युवको में से थे, जो योरप की संस्कृति से प्रभावित हो कर ईश्वर की सत्ता तथा धर्म को अनादर की द्रष्टि से देखते थे । अध्ययन के अतिरिक्त खेलकूद और संगीत में उनकी विशेष रुचि थी । विद्यार्थी जीवन में वे ब्रह्म समाज की ओर आकृष्ट हुए । श्री रामकृष्ण के सम्पर्क में आने पर उनके भीतर आध्यात्मिक प्रतिभा प्रकाशित हो उठी । उनकी प्रेरणा से संन्यासी होकर वे वेदांत का प्रचार करने लगे । साथ ही जीवन पर विज्ञान के प्रति उनकी श्रद्धा रही । विज्ञान के द्वारा वे भारत की दुर्बलता दूर करना चाहते थे । सन १८६३ में विश्व के सभी धर्मों का एक महासम्मेलन शिकागो (अमेरिका) में हुआ । उस सम्मेलन में जाकर विवेकानंद ने जिस ज्ञान और विवेक का परिचय दिया, उससे वह के सभी लोग पहले ही दिन मुग्ध हो गये । इसके बाद तो अमेरिका में विवेकानंद के भाषणों की धूम मच गई । वे अमेरिका में तिन वर्ष तक रुके और इंग्लैंड तथा योरोप होते हुए भारत लोटे । उन्होंने वेदांत धर्म के सन्देश को यूरोप में कई देशों में फैला दिया । पश्चिमी देशों के लोग भारत के आध्यात्मिक विचारो और आदर्शो से प्रभावित हुए तथा असंख्य स्त्री- पुरुष विवेकानंद के शिष्य बन गए १८८८ इ. में उन्होंने पेरिस में धार्मिक इतिहास - परिषद में भाग लिया और मिश्र के रास्ते भारत लौटे । उन्होंने कई बार भारत का पैदल पर्यटन किया । कन्याकुमारी में समुद्र की एक चट्टान पर आसन लगाये हुए उन्हें समग्र भारत की नैसर्गिक एकता और महात्म्य का बोध हुआ और उन्होंने देश की समस्याओ का विकराल स्वरूप देखा ।

विवेकानंद ने पश्चिमी देशों के लोगों को भारत की आध्यात्मिकता अपनाने की प्रेरणा दी, पर भारत आकर उन्होंने अपने देशवासियों को पश्चिमी देशों की भ्रांति आर्थिक द्रष्टि से सम्पन्न और प्रगतिशील बनने का संदेश दिया | वे इस बात को बल पूर्वक कहते थे की भूखे, नंगे और रोगी लोगो को भगवान के भजन का उपदेश नहीं दिया जा सकता | उन्होंने भोजन, वस्त्र और अन्य सुविधाएं देना ही सच्चा वेदांत है।

विवेकानंद का देहांत ३८ वर्ष की अवस्था में १९०२ में हो गया | इस छोटी आयु में उन्होंने बड़े-बड़े कार्य किए | उनके द्वारा किया गया सबसे महान कार्य लोगो में वेदांत धर्म के प्रति श्रद्धा पैदा करना था | उस समय बुद्धिवादी लोगो की श्रद्धा, भारत तथा दुसरे देशो में भी, धर्म से उठती जा रही थी | धर्म का प्रचार करने के लिये यह आवश्यक था की उसे एक रूप में जनता के सामने रखा जाये, जो उनकी वैज्ञानिक और भौतिक प्रगति में बाधक न हो। इसके साथ ही उन्होंने भारतवासीओको यूरोपीय संस्कृति के अंधानुकरण से बचने और अपने धर्म तथा संस्कृति पर श्रद्धा रखने का सन्देश दिया | उन्होंने अपनी वाणी से भारतवासीओ में यह अभिमान जगाया की भारतीय संस्कृति, धर्म और साहित्य विश्व में सबसे ऊँचे हैं और उनके उत्तराधिकारी बने रह कर देशवासी उन्नति कर सकेंगे | विवेकानंद की प्रेरणा से भारत में यह विश्वास जागा की हम किसी से हिन्न नहीं हैं |

विवेकानंद ने भारतवासीओ को जो उपदेश दिया, वह केवल धर्म के लिए नहीं था | वे पश्चिमी देशो के वैज्ञानिक प्रगति का भारत की निर्धनता दूर करने में प्रयोग करने के पक्ष में थे | उन्होंने भारतवासीओ को कर्मठ और उद्यमी बनने की प्रेरणा दी और सबको वेदांत - धर्म की सार्वत्रिक प्रेमधारा में अवगाहन करने की सिख दी | वे दरिद्र नारायण की सेवा करना परम धर्म मानते थे | यही उनका वेदांत धर्म है | उनका मत है की भारत में गरीबी और दुर्बलता नहीं होनी चाहिए |

विवेकानंद द्वारा स्थापित रामकृष्ण मिशन, ब्रह्म समाज या आर्य समाज के भ्रांति कोई नवीन सम्प्रदाय नहीं था | यह केवल उन लोगो का एक संघ था, जो दरिद्र और दुखी लोगो की सेवा करने में सुख का अनुभव करते थे | इसका प्रमुख उद्देश्य समाज-सेवा था | मिशन ने भारतीय जनता में नए प्रगतिशील विचारो का प्रचार किया |

विवेकानंद की प्रेरणा से आज भारत तथा विदेशो में रामकृष्ण मिशन की अनेक शाखाएं कार्य कर रही हैं | तथा उन सभी में सच्ची सेवा की भावना है | रामकृष्ण मिशन द्वारा जनता की सेवा की जाती है | और रामकृष्ण के विचारो का प्रकाश फैलाया जाता है | विवेकानंद के बाद क्रमशः ब्रह्मानन्दन, शिवानन्दन और अखंडानन्दन ने अध्यक्ष रूप में मिशन का संचालन किया है |

संदर्भग्रन्थ

- 1) आचार्य जावडेकर - आधुनिक भारत
- 2) रामजी उपाध्याय - भारतीय धर्म और संस्कृति
- 3) G. S. Dhurye - Culture and Society
- 4) पी.एन. योपरा (संपा) - भारतीय गेऑटियर(अनु.) अेय. जू. शास्त्री वाय. ए. दीक्षित
- 5) मंगुभाई पटेल - भारतना स्वातंत्र्य संग्रामो अने तेना घडवैया
- 6) रमणलाल के. धारैया - आधुनिक भारतनो इतिहास अने भारतना स्वातंत्र्य संग्रामो भाग १ अने २